नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

ट्रंप-पुतिन वार्ता : नए समीकरणों की प्रस्तावना

अलास्का के एंकोरेज में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की मुलाक़ात जिस तरह से बिना ठोस नतीजे के समाप्त हुई, उसने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या दुनिया की जियो पॉलिटिक्स निर्णायक मोड़ पर पहुँच चुकी है, या अभी भी पुराने समीकरणों में जकड़ी हुई है.

करीब तीन घंटे चली इस बहुचर्चित मुलाक़ात से वैश्विक जगत को बड़ी उम्मीदें थीं. व्हाइट हाउस ने पहले ही संकेत दे दिया था कि यूक्रेन युद्ध वार्ता का केंद्रीय मुद्दा होगा, मगर न युद्धविराम पर सहमति बनी और न किसी समझौते की ठोस घोषणा हो सकी. ट्रंप का यह कहना कि 'कोई समझौता तब तक नहीं होगा, जब तक असल में समझौता नहीं हो जाता' कूटनीतिक अस्पष्टता का संकेत देता है. वहीं पुतिन का यह कहना कि 'संघर्ष को समाप्त करने के लिए उसके मूल कारणों को खत्म करना होगा' इस बात की पुष्टि करता है कि रूस पीछे हटने को तैयार नहीं है. दिलचस्प यह है कि बैठक का प्रारूप वन-ऑन-वन से थ्री-ऑन-थ्री में बदला गया, और अंत में संयुक्त बयान तो जारी हुआ लेकिन पत्रकारों के सवालों से परहेज़ किया गया. यह स्पष्ट करता है कि दोनों नेता अभी 'पब्लिक नैरेटिव' गढ़ने से बच रहे हैं और असल बातचीत गहरे स्तर पर, पर्दे के पीछे चल रही है.

भारत जैसे देशों के लिए यह मुलाक़ात विशेष महत्व रखती है. अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट का यह बयान कि अगर ट्रंप-पुतिन वार्ता बेनतीजा रही तो भारत पर टैरिफ़ और बढ़ाए जाएंगे, यह संकेत है कि इस युद्ध और उससे जुड़े भू-राजनीतिक समीकरणों का असर सीधे-सीधे उभरती अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ रहा है. भारत को अपनी सामरिक और आर्थिक नीति दोनों मोर्चों पर बेहद संतुलन के साथ आगे बढ़ना होगा. निस्संदेह, हालात स्थिर नहीं हैं. अमेरिका और रूस के बीच की दूरी जितनी बढ़ती है, उतना ही यूरोप असुरक्षित होता है और एशिया पर दबाव बढ़ता है. चीन इस शून्य को भरने की कोशिश करेगा, जबकि भारत को अमेरिका-रूस-चीन की त्रिकोणीय कूटनीति के बीच अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' बनाए रखनी होगी. ट्रंप और पुतिन की यह बैठक भले ही किसी ठोस समझौते पर समाप्त न हुई हो, लेकिन यह संकेत अवश्य देती है कि विश्व व्यवस्था पुराने 'कोल्ड वॉर' ढांचे में नहीं रह सकती. अब भू-राजनीति बहुध्रुवीय है,जहां हर निर्णय का असर सीधे-सीधे वैश्विक दक्षिण यानी ग्लोबल साउथ की राजनीति, व्यापार और सुरक्षा पर पड़ेगा. कुल मिलाकर एंकोरेज की बैठक शायद 'तुरंत समाधान' लेकर नहीं आई, लेकिन यह 'नए समीकरणों' की प्रस्तावना ज़रूर है. आने वाले समय में ट्रंप-पुतिन की अगली मुलाक़ातें और उनसे उपजने वाले फैसले यह तय करेंगे कि क्या दुनिया स्थायी शांति की ओर बढ़ेगी या एक और दीर्घकालिक अस्थिरता के दौर में प्रवेश करेगी.

बहरहाल,भारतीय संदर्भ में देखा जाए तो यह स्थिति 'रणनीतिक दोराहे' जैसी है. भारत एक ओर रूस से सस्ते तेल और रक्षा तकनीक पाकर अपनी ऊर्जा और सुरक्षा ज़रूरतें पूरी कर रहा है, तो दूसरी ओर अमेरिका के साथ बढ़ते व्यापार और इंडो-पैसिफिक साझेदारी उसके आर्थिक भविष्य के लिए अहम हैं. ऐसे में यदि अमेरिका रूस पर और सख्त प्रतिबंध लगाता है, तो भारत पर भी दबाव बढ़ेगा कि वह किस ओर झुके. यही वह क्षण है जहां, भारत की स्वतंत्र कूटनीति और विदेश नीति की असली परीक्षा होगी.

पीएम नरेंद्र मोदी के संकल्प का भारत

दिलीप झा

लाल किले के प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त को लगातार 12वीं बार संबोधित कर देश के प्रति अपने संकल्प को जनता के सामने जिस अंदाज में रखा है उससे यह स्पष्ट संदेश जाता है कि उनका विजन विकसित भारत को लेकर कितना विराट है. उन्होंने अपने 103 मिनट के उद्‌बोधन में मोदी ने विकास का एक ऐसा रोड मैप तैयार किया है जो वैचारिक और सांस्कृतिक दृष्टि से युक्त करोड़ों देशवासियों के भावों का प्रकटीकरण है.

> विपक्ष यह भूल गया कि जिस विचार को लेकर मोदी चल रहे हैं या जिस विचार में वह दीक्षित हुए हैं, उस पर ही कायम हैं. शायद इसी कारण मोदी ने आरएसएस की देश सेवा की प्रशंसा करते हुए उसे विश्व का सबसे बड़ा एनजीओ कहा लेकिन यह कांग्रेस और अन्य विपक्षी नेताओ रास नहीं आया. हालांकि विपक्ष को यह भलीभांति पता है कि संघ के वैचारिक पर चलते हुए ही मोदी राजनीति में आए और राष्ट्र सर्वोपरि सिद्धांत को अपनाया. मोदी ने व्यापारी वर्ग और आम जनता को दिवाली से पहले जीएसटी कम करने का आश्वासन देकर यह सिद्ध कर दिया कि हमारे लिए देशहित सबसे पहले है. उन्होंने कहा कि आपरेशन सिंदूर के पराक्रम से पाकिस्तानी आतंकियों के ठिकानों को न केवल ध्वस्त किया बल्कि उसके कई एयरबेस तबाह हो गए. पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान से सिंधु जल संधि तोड़ने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने दो टूक कहा कि अब खून और पानी एक साथ नहीं बहेंगे.

भारत के मुखिया से जनता की उम्मीदें असंख्य हैं और उनकी आशाओं के अनुरूप विकास कार्यों को जमीनी शक्ल देने के लिए मोदी ने दृढ़ता के साथ अपने कदम को आगे बढ़ाया है. अपने भाषण में उन्होंने अपने बुलंद हौसलों के साथ बुलंद भारत की तस्वीर रखते हुए वोकल फोर लोकल के प्रति ठोस इरादा व्यक्त किया है. विश्व बिरादरी की दादागिरी के खिलाफ आवाज उठाने का उनका अदम्य साहस यह दर्शाता है कि भारत का नेतृत्व एक ऐसा व्यक्तित्व के हाथ में है जो देश के लिए जीता है और इसमें कोई दोराय नहीं कि मोदी के इसी अंदाज पर करोड़ों देशवासियों को गर्व की अनुभूति होती है. इसलिए यह कहने में कोई गुरेज नहीं कि मोदी के दृष्टिकोण, व्यवहार और कर्म भारत की नियति को गढ़ते हैं. हालांकि आज देश में चुनौतियां बहुत है लेकिन चुनौतियों से पार पाने का रास्ता मोदी को पता है क्योंकि उनके पास पराक्रम है और यही देश की ताकत है.

लाल किले से मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का बिना नाम लिये सबको चौकाया कि भारत अब किसी के सामने झुकने के लिए तैयार नहीं है क्योंकि अतीत में इससे देश को बहुत नुकसान पहुंचा है. उन्होंने आत्मनिर्भरता के जिस मंत्र को दृढ़ता से दोहराया है उसमें उद्योग जगत को खास तौर पर बड़ी भूमिका निभानी होगी. प्रधानमंत्री मोदी ने 2047 तक भारत को विकसित बनाने का लक्ष्य तय कर रखा है और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उनकी सरकार की ओर से अनेक कदम भी उठाए गए हैं. कुछ ऐसे ही कदमों की घोषणा उन्होंने लाल किले से भी की. घुसपैठियों को आड़े हाथ लेते हुए मोदी ने स्पष्ट कहा कि यह देश की बड़ी समस्या है और हमारी प्राथमिकता इसे जड़ से खत्म करना है क्योंकि इससे हमारे मुल्क पर निकट भविष्य में बड़ी तबाही आने वाली है. भारत के राजनीतिक इतिहास में पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने घुसपैठ रोकने की दिशा में मुखर होकर आवाज उठाई है.

यह ध्रुव सत्य है कि घुसपैठियों ने भारत को धर्मशाला समझ रखा है. देश की करोड़ों जनता मोदी के इस बात से पूर्णतया सहमत इन घुसपैठियों पर शिकंजा नहीं कसा गया तो उनके हौसले बढ़ते जाएंगे और वे हमारी संस्कृति को चौपट कर देंगे. घुसपैठियों और डेमोग्राफी बदलने की समस्या पर मोदी ने जो बातें मोदी ने रखीं उससे यह संकेत निकलता है कि यह सिर्फ अवैध तरीके से देश में घुसने का मसला नहीं है बल्कि सांस्कृतिक हमला है. इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि डेमोग्राफी बदलने से भारतीय संस्कृति बुरी तरह प्रभावित हो रही है. हर देश को अपनी संस्कृति बचाने का पूरा अधिकार है. जब अपने देश से घुसपैठियों को निकाल सकता है तो भारत क्यों नहीं, यह एक बड़ा सवाल है. इस सांस्कृतिक हमले या संकट को भारत ही नहीं, बल्कि फ्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी जैसे कई देश डेमोग्राफी बदलने से अपनी संस्कृति बदल जाने का खतरा महसूस कर रहे हैं और वहां भी इससे निपटने के लिए रणनीति बनाई जा रही है.

प्रधानमंत्री मोदी की यह बात लाख टके की है कि समृद्धि कितनी भी हो अगर सुरक्षा के प्रति उदासीनता बरतते हैं तो समृद्धि भी किसी काम की नहीं रहती. उन्होंने कहा कि आने वाले 10 साल 2035 तक राष्ट्रीय सुरक्षा कवच का विस्तार करना चाहता हूं ताकि देश का हर नागरिक सुरक्षित महसूस करे और इसलिए देश सुदर्शन चक्र मिशन लांच करेगा. यह सुदर्शन चक्र मिशन दुश्मनों के हमले को नाकाम तो करेगा ही पर कई गुणा अधिक शक्ति से दुश्मन को हिट करेगा. प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की मुक्त कंठों से तारीफ कर विपक्ष को हैरत में डाल दिया क्योंकि 2024 के आमसभा चुनाव में भाजपा को पूर्ण बहुमत नहीं मिलने के बाद से यह कयास लगाए जा रहे थे कि मोदी और संघ के बीच कुछ दूरियां हो गई है.

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं)

मालवा- निमाड़ की डायरी

देवास में सज्जन सिंह वर्मा का तिलिस्म टूटा

संजय व्यास

आखिर देवास में पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा का तिलिस्म टूट गया. वर्षों से यहां वर्मा व मनोज राजानी की जोड़ी ही देवास कांग्रेस को अपनी मर्जी अनुसार चलाती आ रही थी. वर्मा की गहरी दोस्ती की वजह से देवास शहर कांग्रेस की कमान मनोज राजानी के पास ही रहती रही. इसके कारण अन्य उपेक्षित नेता कांग्रेस कार्यक्रमों के प्रति उदासीन होते जा रहे थे, फलस्वरूप देवास विधान सभा व नगर निगम में पार्टी को लगातार हार का मुंह देखना पड़ रहा था. कांग्रेस संगठन सृजन अभियान के दौरान पर्यवेक्षकों को दावेदारों के साथ अलग-अलग विचार विमर्श में यह बात मुख्यतौर पर बताई गई थी.

दशकों से छात्र राजनीति से कांग्रेस का झंडा उठा एनएसयूआई जिलाध्यक्ष, सेवादल अध्यक्ष, एलडरमैन, प्रदेश महामंत्री रहे कांग्रेस नेता प्रयास गौतम ने तो पर्यवेक्षकों को देवास शहर में पार्टी की दुर्दशा के लिए सीधे-सीधे वर्मा-राजानी की जोड़ी को जिम्मेवार बताया था. यह भी बताया था कि चुनाव में देवास को लावारिस छोड़ राजानी देवास के कार्यकर्ताओं की फौज सज्जन वर्मा के प्रचार में सोनकच्छ में डेरा जमाते रहे. अंततः कानुगोलू टीम के सर्वे और पर्यवेक्षकों के समक्ष स्पष्टवादिता के कारण योग्य दावेदार लगे प्रयास गौतम को कांग्रेस ने शहर कांग्रेस अध्यक्ष नियुक्त कर दिया.

किराये की भीड़ ने कराई किरकिरी

अंचल में नवनियुक्त कांग्रेस जिलाध्यक्ष के स्वागत समारोह में उस समय असहज स्थिति का सामना करना पड़ा जब मोदी-योगी जिंदाबाद के नारे लगने लगे. वाकिया धार का है. नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के खास समर्थक स्वतंत्र जोशी को धार जिला कांग्रेस का नया जिला अध्यक्ष बनाए जाने के बाद स्वागत समारोह रखा गया था. समर्थकों ने इसे भव्य बनाने के लिए कुछ किराये की भीड़ इकट्ठी कर ली थी. समारोह के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया. जमकर हो रही नारेबाजी के बीच कांग्रेस कार्यकर्ता जमकर झूमते नज़र आए. इसी बीच माहौल तब बदल गया जब कार्यकर्ताओं ने मोदी जी, योगी जी जिंदाबाद के नारे लगाने शुरू कर दिए. फिर नवागत जिलाध्यक्ष ने उन्हें रोका तो फिर राहुल गाँधी जिंदाबाद के नारे लगाने लगे. अब कांग्रेस के कर्ताधर्ता यह जानने में लगे हैं कि यह भीड़ की नासमझी थी या पार्टी का माहौल खराब करने के लिए जान बूझकर किया गया.

नहीं चली शेरा की

पूर्व विधायक सुरेन्द्र सिंह ठाकुर शेरा अपने भतीजे हर्षित ठाकुर को लाख कोशिशों के बावजूद बुरहानपुर शहर अध्यक्ष बनवाने में असफल रहे. प्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रतिनिधि व पूर्व यूवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष हर्षित ठाकुर शहर कार्यवाहक अध्यक्ष का कार्यभार सम्हाल रहे थे. उन्हें पूर्ण शहर अध्यक्ष की पदवी दिलाने के लिए शेरा काफी समय से मशक्कत कर रहे थे. भारत जोड़ो यात्रा प्रबंधन में हर्षित को आगे करने से लेकर हर वरिष्ठ कांग्रेस नेता, प्रदेश प्रभारी से मिलवाने में उन्होंने कोई कसर न छोड़ी. सृजन अभियान में भी लाबिंग करी, पर नतीजा शून्य निकला और पार्टी ने शहर अध्यक्ष पद पर रिंकू टांक पर भरोसा बरकरार रखते हुए फिर से कमान सौंप दी.

क्या स्ट्रीट डॉग्स से छुटकारा पाना उचित होगा?

एक सदी से अधिक समय तक भारत की नगरपालिकाएं आवारा कुत्तों से छुटकारा पाने के लिए उनकी हत्याएं करती रहीं अक्सर भयावह तरीके अपनाते हुए जैसे बिजली के करंट से या जहर देकर हत्या करना या गाड़ी से कुचल देना. इन क्रूर अभियानों के बावजूद कुत्तों की संख्या कभी कम न हुई और रेबीज के मामले भी बढ़ते ही रहे. इस सिलसिले में परिवर्तन 1990 के दशक में आया जब अदालतों, सामाजिक कार्यकर्ताओं व विशेषज्ञों ने मानवीय, वैज्ञानिक विकल्पों पर बल दिया. एनिमल बर्थ कंट्रोल (एबीसी) कार्यक्रम विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) द्वारा मान्यता प्राप्त मॉडल पर आधारित है, जिसमें कुत्तों को पकड़कर उनकी नसबंदी व टीकाकरण किया जाता है और फिर उनको उनके गृह क्षेत्रों में छोड़ दिया जाता है. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह साबित हो चुका है कि कुत्तों की संख्या नियंत्रित करने का यह एकमात्र तरीका है, जिससे उनका काटना भी बंद हो जाता है और रेबीज पर भी विराम लग जाता है. गौरतलब है कि 1996 में जयपुर व चेन्नई में पायलट एबीसी प्रोजेक्ट लागू किया गया. नतीजे बहुत शानदार रहे. चार वर्ष में चेन्नई में रेबीज से होने वाली मौतें 120 से घटकर 5 रह गई और जयपुर में कुत्तों की संख्या में 28 प्रतिशत कमी आई व रेबीज से एक भी मौत नहीं हुई. इसके पांच साल बाद यानी 2001 में केंद्र के एबीसी नियम लागू किए गए. आज गोवा,

सिक्किम, हरियाणा व उत्तराखंड जैसे राज्यों ने शून्य रेबीज स्टेट्स हासिल कर लिया है. यह सब एबीसी के निरंतर प्रयासों से ही संभव हो सका है. एबीसी का राष्ट्रीय स्तर पर जो प्रभाव पड़ा है, उससे इनकार नहीं किया जा सकता. भारत में 2024 में रेबीज से मात्र 54 व्यक्तियों की मौत हुई, जो कि एबीसी कार्यक्रम लागू करने से पहले की तुलना में 96 प्रतिशत कम है. आवारा कुत्तों को एक जगह से हटाकर दूसरी जगह पहुंचाना उल्टा पड़ जाता है. जब बधिया किए गए कुत्तों को उनके क्षेत्र से हटा दिया जाता है तो वहां एक खालीपन आ जाता है, जिसमें नए बिना बधियाकृत अपरिचित प्रवेश कर जाते हैं और टकराव की आशंकाएं बढ़ जाती हैं.

-डॉ. अनिता राठौर

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मोदी ने क्यों नहीं किया नेहरू को याद शरद पवार ने छेड़ा नया विवाद

पड़ोसी ने हमसे कहा, एनसीपी अध्यक्ष शरद पवार को प्रधानमंत्री मोदी का स्वाधीनता दिवस संबोधन पसंद नहीं आया. उन्होंने कहा कि मैं इस बात से बहुत व्यथित महसूस कर रहा हूं कि पीएम ने अपने 103 मिनट के भाषण में देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम का उल्लेख नहीं किया. पवार ने याद दिलाया कि नेहरू ने अपनी जवानी के अमूल्य वर्ष स्वाधीनता संग्राम को अर्पित कर दिए थे और समूची दुनिया को शांति का संदेश दिया था. उनके इतने व्यापक योगदान के बावजूद मोदी ने उनका नाम लेना जरूरी नहीं समझा. यह दुर्भाग्यपूर्ण है.

हमने कहा, क्या अब शरद पवार मोदी को सिखाएंगे कि उन्हें क्या बोलना है? पहले जनसंघ और फिर बीजेपी की बुनियाद नेहरू-गांधी विरोध व नफरत पर टिकी रही. नेहरू की नीतियों से बीजेपी को हमेशा बदहजमी होती रही है. नेहरू-गांधी परिवार की लोकप्रियता की वजह से जनसंघ बीजेपी को लंबे समय तक सत्ता के लिए तरसना पड़ा. एक समय था जब बच्चे लाइफ ऑफ ए ग्रेट मैन पर सिर्फ गांधी-

नेहरू का निबंध लिखा करते थे. नेहरू की याद भुलाने की पिछले 11 वर्षों से लगातार सुनियोजित कोशिश हो रही है. नेहरू मेमोरियल म्यूजियम को सभी प्रधानमंत्रियों के म्यूजियम में बदलकर मोदी सरकार ने देवेगौड़ा और गुजराल जैसे बौनों को नेहरू की बराबरी में ला दिया. यहां तक कि नेहरू के 17 वर्ष की तुलना में कुछ महीने प्रधानमंत्री रहे चौधरी चरणसिंह और चंद्रशेखर को भी उनके समकक्ष ला दिया. नेहरू की पंचवर्षीय योजनाएं, गुटनिरपेक्षता, देश के औद्योगिकरण के लिए इस्पात कारखाने बनवाना, भाखड़ा नांगल बांध का निर्माण, समाजवादी अर्थव्यवस्था कुछ भी बीजेपी को पसंद नहीं है. मोदी ने जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का श्रद्धापूर्वक स्मरण किया. हर पार्टी के इस्टदेवता अलग रहते हैं. विभिन्न संस्थाओं से नेहरू का नाम हटाने का सिलसिला जारी रहा. बीजेपी को तकलीफ है कि निधन के 61 वर्ष बाद भी देशवासी नेहरू को क्यों याद करते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, देश की आजादी के लिए हुए आंदोलन से आरएसएस और कम्युनिस्टों ने दूरी बरती थी. मोदी चाहते हैं कि भारतवासी पुरानी यादों को भूलकर वर्तमान के जुमलों में जिएं. नमो नमो करें और 2047 तक भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने का सुनहरा स्वप्न देखें. आरएसएस के प्रति आस्था रखकर संघ शक्ति युगे युगे कहें. बीजेपी मानकर चलती है कि महाराष्ट्र की राजनीति में शरद पवार का समय पीछे छूट गया है और अजीत पवार ही उसके काम के हैं.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11997
-डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3	4	■	5	6
	■	7			■	8	
9	10		■	11	12		
13		■	14			■	■
■	15	16		■	■	17	
18	■	19		20	■		■
21	22	■	23		24		25
26				■	27		

बाएं से दाएं
1. वंश परंपरा से चला आ रहा 5. पूंछ 7. पंक 8. जांघ (उर्दू) 9. सहारा, संबंध, किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग (उर्दू) 11. त्रस्त, 13. जूं का अंडा 14. कपड़े की दीवार (उर्दू) 15. नाडीव्रण 17. नकल, अनुकृति, शब्दों के पहले लगने वाला अव्यय 19. स्वरुचि 21. दुर्गा 23. असरदार, प्रभावपूर्ण 26. मारना और काटना 27. जन्म देनेवाली, माता

ऊपर से नीचे
1. वंश तालिका 2. नोकदार 3. संगजराहत का चूना 4. बेचैन, होगा, व्याकुल, व्यथित होना 5. व्यर्थ की आशा 6. सोचना, विचार करना 10. शिक्षा प्राप्त करना 12. बालू 14. अंजलि (सं.) 16. छाज, दाल वगैरह का पतला पानी 17. हास्य-नाटक 18. जमघट 20. कीमत, दहलीज 22. दोस्त, मित्र 24. अजन्मा, कामदेव, बकरा 25. योद्धा, वीर

Solution 11996

अ	ति	श	यो	क्ति	■	ना	म
मा	ल	■	ज	■	प	रा	ग
न	■	बे	क	सू	र	■	रू
त	मं	चा	■	ना	म	व	र
■	दो	रा	हा	■	वी	र	■
मां	द	■	ल	ह	र	■	अ
ग	री	ब	■	ल	च	क	ना
ना	■	ल	ली		क्र	■	थ

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी, अधिनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में संलग्नता रहेगी, व्यवसाय में वृद्धि होगी, आर्थिक लाभ होगा, उतावलेपन में लिये गये निर्णय हानिकारक रहेंगे, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें, मित्र के सहयोग से उदासीनता दूर होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ का योग है, व्यवसाय में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों की सामाजिक कार्यो में संलग्नता रहेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को उतावलेपन पर लिया गया निर्णय हानिकारक रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये व्यक्तित्व में विकास होगा, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्पष्टवादी, अनुशासन प्रिय, महत्वाकांक्षी होगा, इसकी शिक्षा उत्तम रहेगी, नौकरी व्यापार दोनों में अच्छा लाभ होगा, एक से अधिक आय के साधन उपलब्ध होंगे, अनुकूल समय का लाभ उठाने में सक्षम रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

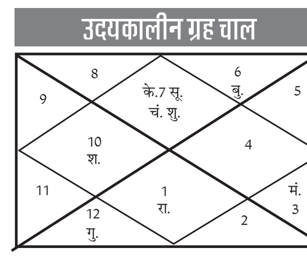

पंचांग

रा.मि. 28 संवत् 2082 भाद्रपद कृष्ण एकादशी भौमवासरे दिन 3/47, आर्द्रा नक्षत्रे रात 2/21, वज्र योगे रात 10/41, बालव करणे सू.उ. 5/35 सू.अ. 6/25, चन्द्रचार मिथुन, पर्व- जया एकादशी व्रत, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

मेष- पारिवारिक मामले में आपसी सहमति से निर्णय करना लाभदायक, आकस्मिक धन लाभ होगा, प्रियजनों से भेंटवार्ता होगी.

वृषभ- कोई लाभ की योजना हाथ से निकल सकती है, अपने खर्च में कटौती करें, मानसिक सुख एवं प्रसन्नता रहेगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

मिथुन- साझेदारी में नया कार्य शुरू कर सकते हैं, दुविधा से बाहर निकलें, अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें, अतिथि आगमन होगा.

कर्क- नए संपर्क आगे बढ़ने में सहायक रहेंगे, लेन देन के मामले सुलझेंगे, आर्थिक कार्यों में शिथिलता रहेगी, उदर विकार रहेगा, रक्त पीड़ा हो सकती है.

सिंह- व्यापार में नये सौदे हाथ में आ सकते हैं, कार्य योजना में बदलाव होगा, पड़ौसियों से मधुरता के भाव रहेंगे, उच्च शिक्षा आदि में विशेष खर्च होगा.

कन्या- समय पर काम पूरा करने का दबाव रहेगा, साझेदारी टूटने का आसार हैं, भूमि संपत्ति के कार्यो में शिथिलता रहेगी, लापरवाही से कष्ट होगा.

तुला- प्रतियोगी परीक्षा में अच्छी सफलता मिलेगी, संतान के व्यवहार से दुख होगा, अध्ययन रचनात्मक कार्यों में रूचि बढ़ेगी, मन में प्रसन्नता रहेगी.

वृश्चिक- लेन देन के मामले में आरोप प्रत्यारोप लगेंगे, परिश्रम के कार्यों में अनुकूलता रहेगी, समय अनुसार निर्णय करना लाभकारी रहेगा.

धनु- विवादास्पद मामले सुलझने के आसार हैं, केरिअर में बेहतर सफलता मिलेगी, व्यवसायिक प्रयासों में अनुकूलता रहेगी, मित्रों एवं प्रियजनों का सहयोग रहेगा.

मकर- मेहमान नवाजी में समय बीतेगा, जल्दबाजी में गलती कर बढेंगे, शारीरिक अस्वस्थ्यता रहेगी, पारिवारिक तनाव दूर होगा, मानसिक संतुष्टि रहेगी.

कुम्भ- अनुशासन की कमी से व्यवस्था बिगड़ सकती है, दूर गये मित्र के संबंध में कोई सुखद समाचार मिलेगा, साहस संयम से कार्य करें.

मीन- भागदौड़ सफल होगी, आजीविका के प्रयासों में सफलता मिलेगी, मनमौजी रवैया से नुकसान होगा, राजकीय सहयोग बना रहेगा, मन:स्थिति संतुलित रहेगी.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण एकादशी को आर्द्रा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, धातु, गुड, खांड, जौ, मटर, चना आदि वस्तुओं में मंदी होगी, शक्कर, अलसी, हींग, सरसों, अरंडी में तेजी का योग है, आज 11 बजकर 24 मिनिट से व्यापार करना लाभकारी रहेगा. भाग्यांक 1126 है.

SUDOKU 7129

8	2			6			1	
	6		8	9			7	5
3			1					2
	3		4				6	
6		2		1		4		3
	8				5		2	
2					3			1
5	1			7	6		4	
	9			4			3	6

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7128

8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5